महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन : बिहार राज्य के सीतामढ़ी जिले के विशेष संदर्भ में।

हरिकिशोर मिश्रा
शोध छात्र
वाणिज्य विभाग,
बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

महिलाएँ समाज का एक अभिन्न अंग है। अतीत से ही महिलाओं का समााज में सर्वोपरि स्थान रहा है। कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग महिलाओं का है। महिलायें सदैव हमारी सामाजिक सांस्कृतिक एवं पारिवारिक व्यवस्थाओं का आधार रही है। आज की परिस्थितियों में जीवन के हर क्षेत्र में इनका योगदान बढ़ रहा है। पुरूषों के साथ महिलाओं की सहभागिता से ही किसी देष, राज्य या क्षेत्र का विकास संभव है।

बिहार में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति

महिला समाज का अभिन्न अंग है अतः सामाजिक परिवेश के उन्नति के लिए महिलाओं में शिक्षा का होना अनिवार्य माना जाता है। सामाजिक रूप से विकसित राज्य तभी माना जा सकता है जब समाज के सभी वर्गों में शिक्षा, व्यवसाय आदि में वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में विकास की सहभागिता स्थापित हो। इन सभी क्षेत्रों में महिलाओं में जागृति के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य का होना आवश्यक है। बिहार राज्य में तो महिलाओं को शिक्षा के तरफ अग्रसर करने में वर्तमान मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता में इनका योगदान अहम माना जाता है। बिहार के विकास पुरूष के रूप में मुख्यमंत्री ने बालिका साईकिल योजना की शुरूआत कर महिला शिक्षा में अलख जगाने का प्रयास किया है तथा इसमें सफलता प्राप्त की है। साथ ही बिहार भारत का वह पहला राज्य बना जो महिलाओं को राज्य स्तर पर सभी क्षेत्रों में 50 प्रतिशत आरक्षण देकर समाज में जागृति लाने का काम किया है। जिसका परिणाम हम समाज में देख रहे हैं। उदाहरण के तौर पर ग्रामीण शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति अपनी अलग पहचान बना रही है। जिसको हम शिक्षक और अन्य नौकरियों में भागीदारी के रूप में देख सकते हैं। अब पुरानी रूढ़ीवादी व्यवस्था से उपर उठ कर हर कदम पे अपनी साहस और सशक्तिकरण का परिचय दे रही है। मुख्यमंत्री ने इनके प्रति अपनी उदारता का दायरा और बढ़ा कर स्नातकोत्तर तक की शिक्षा को मुफ्त कर दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप महिलाएँ शिक्षा के प्रति बहुत जागरूक हुई है तथा अपनी प्रतिभा को निखार कर सभी के सामने आ कर नौकरी, पेशा में भी अपना हाथ आजमाने लगी है। इन सभी स्तरों पर महिलाओं के विकास को देखा जा सकता है। इनके उपलब्धियों की चर्चा किया जाए तो हम इस आधार पर पहुँचते हैं कि वर्ष 1951 में जो इनके साक्षरता का आंकड़ा था उसमें तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। हम इसकी चर्चा इस प्रकार के आंकड़ों से देख सकते हैं।

तालिका 1

बिहार राज्य में में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति

क्र.सं.	वर्ष	कुल संख्या (प्रतिशत में)	पुरूष	महिला
1.	1951	13.49	22.68	4.22
2.	1961	21.95	35.85	8.11
3.	1971	23.17	35.86	9.86
4.	1981	32.32	47.11	16.61
5.	1991	37.49	51.37	21.99
6.	2001	47.55	60.32	33.57
7.	2011	49.45	65.40	37.13

उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिहार राज्य में महिलाओं की साक्षरता दर या यूँ कहें कि शिक्षा के क्षेत्र में वर्ष 1951 के अपेक्षा महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। यहाँ पर हम यह देखने को मिलता है कि राज्य की कुल जनसंख्या 13.49 होती है वहाँ पर वर्ष 1951 में महिलाओं की साक्षरता निम्न स्तर पर यानि 4.22 होती है परन्तु हम जैसे–जैसे दशक के अनुसार आंकड़े को देखते है तो वर्तमान परिदृश्य बहुत ही बदली हुई नजर आती है।

बिहार राज्य के सीतामढ़ी जिले में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति

सीतामढ़ी का स्थान हिन्दू धमशास्त्रों में उत्तम है क्योंकि यह सीता जी के उद्भव से जुड़ा है। त्रेतायुग में राजा जनक की पुत्री तथा राम की पत्नी देवी सीता का जन्म पुनौरा में हुआ था। इस जगह की जनश्रुति यह है कि सीताजी के प्रकट स्थल पर उनके विवाह के पश्चात् राजा जनक ने भगवान राम और जानकी की प्रतिमा लगवायी थी। लगभग 500 वर्ष पूर्व अयोध्या के एक संत बीरबल दास ने ईश्वरीय प्रेरणा पाकर उन प्रतिमाओं को खोजा और उनका नियमित पूजन आरंभ किया। जिससे यह स्थान आज जानकी कुण्ड के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में मुस्लिम शासन आरंभ होने तक मिथिला के शासकों के कर्नाट वंश ने यहाँ शासन किया। बाद में भी स्थानीय क्षत्रपों ने यहाँ अपनी प्रभुता कायम रखी लेकिन अंग्रेजों के आने पर यह पहले बंगाल फिर बिहार प्रांत का अंग बन गया।

जिले में नागरिकों का रहन–सहन सादा है। गांवों में पुरुष घुटनों तक की धोती, बगरती पहनते हैं तथा महिलाएँ साड़ी पहनती हैं और कस्बों में पायजामे कमीज, धोती–कुर्ता, कोट, साड़ी, सलवार–सूट इत्यादि भी पहने जाते हैं। मुसलमान चूड़ीदार पायजामे कुर्ता और शेरवानी पहनते हैं। सीतामढ़ी जिले में पारम्परिक सामाजिक मान्यताओं के आधार पर महिलाओं को आज भी पुरुषों से निम्न माना जाता है।

सीतामढ़ी जिला मुख्यतः एक कृषि प्रधान क्षेत्र है और यहाँ स्त्रियाँ हमेशा से ही जीविका के लिए पुरुषों के साथ खेतों में काम करती रही हैं। शहरों में भी लम्बे अर्से से निम्न वर्गों की स्त्रियाँ फैक्ट्रियों व घरों में कार्यरत रही हैं। उच्च वर्ग की शिक्षित स्त्रियों का घरों से बाहर उपयोगी नौकरियों की तलाश में निकलना अपेक्षाकृत नई बात है। परम्परागत सीतामढ़ी के समाज में मध्य और उच्च वर्ग की स्त्रियों का घरों से बाहर नौकरी करना सम्मानजनक नहीं समझा जाता था। प्रारम्भ में घोर आर्थिक आवश्यकता तथा कठिनाईयों मे ही इन वर्गों की स्त्रियों ने घरों से बाहर निकलकर नौकरियाँ करनी शुरू की हैं। पहले की महिलाओं की साक्षरता दर 26.13 प्रतिशत थी। सुविधाएँ उपलब्ध होने के बाद 2011 की जनगणना के अनुसार अब साक्षरता दर में वृद्धि होकर 43.40 प्रतिशत हो गई है। शिक्षा और चेतना बढ़ने के साथ–साथ घर के बाहर काम करने वाली स्त्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। शिक्षा महिलाओं के विकास का एक महत्वपूर्ण मापदण्ड है। यह आर्थिक शक्ति एवं आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। यह देखा गया है कि महिलाओं के विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर

करने में शिक्षा एक प्रभावी यन्त्र के रूप में कार्य करती है। संचार के साधनों, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का विकास होने से स्त्रियों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करना प्रारम्भ किया है। शिक्षा के प्रसार से उनके विचारों एवं मूल्यों में परिवर्तन आने लगे हैं तथा स्त्रियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक व शैक्षणिक इत्यादि सभी क्षेत्रों के प्रति चेतना का विकास हुआ है। समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के प्रति उनकी जागरुकता बढ़ी है। आज महिलाएँ अर्थव्यवस्था के सभी संगठित और असंगठित क्षेत्रों में लगी हुई है। आज महिलाएँ भले शिक्षित हो या अशिक्षित, शहरी हों या ग्रामीण, युवा हों या वृद्धा सरकार के विभिन्न रोजगार और मजदूरी आधारित रोजगार कार्यक्रमों से लाभ उठा रही हैं लेकिन यह पर्याप्त मात्रा में नहीं।

प्रजातन्त्रीय सरकार के गठन के बाद से राजनीति में स्त्रियों के प्रतिनिधित्व का अनुपात बढ़ रहा है। ग्राम पंचायतों, क्षेत्र पंचायतों व जिला पंचायतों तथा नगरपालिकाओं में महिलाओं के लिये स्थान आरक्षित किये जाने के बाद महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता में वृद्धि हुयी है। विभिन्न पदों पर महिलाएँ सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं, परन्तु उनकी संख्या पुरुषों की तुलना में अत्यन्त निम्न है जिसका कारण परम्परागत पुरुष सत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था है।

तालिका 4.3

सीतामढ़ी जिला में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति

क्र.सं.	प्रखंड का नाम	कुल महिला	शिक्षित महिला	अशिक्षित महिला
1.	बैरगनिया			
	शहरी	20365	9971	10934
	ग्रामीण	42175	12883	29292
2.	डुमरा			
	शहरी	20209	12295	7914
	ग्रामीण	152484	51370	101114
	सीतामढ़ी	31890	19927	11963
3.	पुपरी			
	शहरी	7068	4911	2157
	ग्रामीण	74582	27736	46846
4.	बेलसंड			
	शहरी	9640	3742	5898
	ग्रामीण	47342	17089	30253
5.	सुप्पी	57676	20342	37334
6.	मेजरगंज	48805	15994	32711
7.	सोनबरसा	119774	37560	82214
8.	परिहार	160299	46244	114055
9.	सुरसंड	99982	36420	63562
10.	बथनाहा	124341	42210	82131
11.	रीगा	97445	35998	61447
12.	परसौनी	39891	12826	27065
13.	रून्नीसैदपुर	176091	57107	117984
14.	बाजपट्टी	102269	37443	64826
15.	चोरौत	37647	14865	22782

16.	बोखरा	62284	20812	41472
17.	नानपुर	86942	29233	57709
	सीतामढ़ी जिला	1619181	568117	1051164

स्रोत : सीतामढ़ी जिला गजेटियर, 2017ए ब्मदेने 2011ण

सीतामढ़ी जिले की बैरगनिया प्रखण्ड की जहाँ तक बात की जाए तो इस जिले के इस प्रखण्ड में महिलाओं की शहरी जनसंख्या लगभग 20365 है जहाँ पर शिक्षित महिलाओं की संख्या 9971 है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि बैरगनिया प्रखण्ड में महिलाओं में शिक्षित महिलाओं की संख्या लगभग 49 प्रतिशत के आस–पास है। डुमरा प्रखण्ड में शहरी आबादी में कुल महिलाओं की संख्या का प्रश्न है तो वह लगभग 20209 है जबकि इनमें साक्षरता की जागृति और उन्नति को देखा जाए तो यह लगभग 12295 है। यह कुल जनसंख्या में 12295 शिक्षत महिलाओं की संख्या है। जबकि 7914 अशिक्षित महिलाओं की संख्या है। यहाँ यह निर्धारित होता है कि शहर की महिलाओं में शिक्षित महिलाओं की संख्या 52 प्रतिशत के आस–पास है। इसी तरह पुपरी प्रखण्ड की कुल महिला संख्या लगभग 7068 है। जिसमें शिक्षित महिलाओं की संख्या 4911 है। बेलसंड में शिक्षित महिला लगभग 3742 है जहाँ कुल महिलाओं की संख्या लगभग 9640 है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में यह संख्या लगभग 3742 एवं 47342 है जो इसके विकास एवं महिला जागृति के तरफ अग्रसर होने का प्रमाण देता है। इसी तरह अन्य प्रखण्डों की स्थिति है। शहर की शिक्षित महिला पुरूष की तुलना में लगभग बराबरी के स्थान को स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं। समाज की रूढ़ीवादी व्यवस्था से उपर उठकर अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रही है। इस संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों में थोड़ी उदासीनता दिखती है। परन्तु अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा का अलख जगने लगा है तथा ग्रामीण इलाके में भी बच्चियाँ साईकिल योजना तथा पोशाक योजना का लाभ उठाकर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है। जो कि हमारे समाज की बदलती परिवेश को दर्शाने का प्रयास किया है।

बिहार की सम्पूर्ण आबादी का 42 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे रह रहे हैं जिसमें 50 प्रतिशत महिलायें हैं। राज्य बाढ़ और सूखा की समस्या से निजात पाने के लिए समाधान ढूढ़ने के लिए संघर्षरत है। इस परिदृष्य में आशा की किरण झलकती है कि इन संसाधनों के द्वारा कार्य करते हुए जनता जीविका पा सकती हैं वहीं अपने पारिवारिक आय और राज्य के आय में भी बढ़ोतरी कर सकती है। समस्या की गंभीरता को देखकर संज्ञान लेते हुए बिहार सरकार ने इस दिशा में विश्व बैंक द्वारा सम्पोषित ‘जीविकोपार्जन संवर्द्धन’ योजना की शुरूआत की।

इसी कोशिश के तहत वर्ष 2010 में पहली बार जीविका नाम से एक परियोजना की शुरूआत की गई। इस योजना की शुरूआत बी0 आर0 एल0 पी0 एस0 (बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति) के नाम से बिहार सरकार द्वारा पंजीकृत स्वयं सेवी संस्था द्वारा संचालित किया जाता है। इस योजना का मकसद रोजगार के साधनों को सृजित करने वाले विचारों को सामने लाना और राज्य भर में उसे क्रियान्वित करना है। जीविका कार्यक्रम को व्यापक आधार देने के मकसद से राज्य सरकार जीविका बिहार इनोवेशन फोरम के तहत रोजगार सृजन के विचारों को सामने लाने के लिए कई तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन करा रही है। इस परियोजना में विश्व बैंक साझेदार की भूमिका निभा रहा है।

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति के द्वारा ग्रामीण जीविकोपार्जन के विकल्प को विकसित कर ग्रामीण जीविकोपार्जन के विकल्प को विकसित कर ग्रामीण गरीबों और महिलाओं के हितार्थ ग्रामीण जीविकोपार्जन के विकल्प और समाजिक तथा आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में कार्यान्वित करता है। बी0 आर0 एल0 पी0 समुदाय के साथ चार विषयों या योजनाओं के द्वारा मध्यस्थता करता है – संस्थान और क्षमता का निर्माण, सामाजिक विकास, लघुस्तरीय वित्त और जीविकोपार्जन।

महिला सशक्तिकरण वर्तमान समय का ज्वलंत प्रश्न है। आज समय उस मोड़ पर आ पहुँचा है, जब हमारे समाज के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह महिलाओं के अस्तित्व को स्वीकार करे, उसे महत्व दे और अपनी

जीवन—यात्रा में संपूर्ण सहयोग भावना से उसके साथ चले। आज विज्ञान की प्रगति ने सामाजिक परिवर्तन की गति को तेज कर दिया है। आज की पुरूष जिन्दगी की गाड़ी को अकेला नहीं खींच सकता। उसे उसकी संगिनी की आवश्यकता है और आवश्यकता है उसकी क्षमता को समझकर उसे बढ़ाने की, उसको सम्मान देने की, जिससे उत्प्रेरित, उत्साहित होकर स्त्री दुगुनी से चौगुनी शक्ति सम्पन्न होकर अपने परिवार और समाज को सुखी कर सके।

इस सच्चाई से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि हमारे समाज में पुरूष और स्त्री के महत्व, स्थान और रूतबे में काफी अंतर रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि सभी स्तरों पर औरत को पुरूष से हीन और दुर्बल माना जाता रहा है और यह सोच महिलाओं के प्रति समाज के व्यवहार में भी झलकती है। लेकिन यह भी सच है कि पुरूष और स्त्री के बीच लंबे समय से बनी हुई खाई को पाटने के सार्थक प्रयास हुए हैं और उसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं।

lanHkZ lwph &

1. *www.advanceagriculturalpractice.in/w/index.php/Farming_in_Bihar*.
2. en.wikipedia.org/wiki/Bihari_culture,
3. गंगाशरण सिंह, *बिहार एक सांस्कृतिक वैभव,* पारिजात प्रकाषन, पटना, 1986, पृ.सं. 28
4. उर्मिलेश, बिहार का सच, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1991, पृ.स. 51.
5. www.brand**bihar**.com/.../districts%5C**sitamarhi**%5C**Sitamarhi_RIGA**...
6. आर. पी. वर्मा, पीपल्स पार्टीसीपेशन इन इण्डियन पॉलीटिक्स, रजत पब्लिकेशन्स,दिल्ली, 2002, पृ.सं.151.
7. एच. एस. ढिल्लन, लीडरशिप एंड ग्रुप्स इन विलेज, प्लानिंग कमीशन, दिल्ली, 1955, पृ.स.12.
8. गायत्री शक्तावत, महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता व पंचायतीराज व्यवस्था एक अवधारणात्मक विवेचना, नवजीवन प्रकाशन, निवाई, 2011, पृ.सं.126.